फाल्गुन कृष्ण पक्ष शिवकल्प – 2 फरवरी 2026 से 17 फरवरी 2026

महाशिवरात्रि – 15 फरवरी 2026 – सूर्य ग्रहण – 17 फरवरी 2026

काल पर विजय

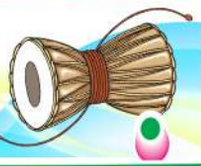

महाकाल महामृत्युंजय दीक्षा

काल अर्थात् समय, काल अर्थात् भय, काल अर्थात् रोग, काल अर्थात् बाधा

महाकाल-महामृत्युंजय की शरण सर्व बाधाओं से मुक्ति...

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

जीवन में सुगन्ध, पुष्टि, तुष्टि, शांति, आरोग्य, उन्नति, तृप्ति, महाकाल-महामृत्युंजय की असीम कृपा से ही संभव है और सद्गुरु अपने शक्तिपात से शिष्य के आज्ञा चक्र के बिन्दुओं को स्पन्दित कर उसे भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते है।

शिष्य का कर्त्तव्य है कि वह महादेव की असीम कृपा प्राप्त हेतु सद्गुरु चरणों में निवेदन कर अपने जीवन काल में निरन्तर महाकाल-महामृत्युंजय ग्रहण करता रहे और निरन्तर साधना और अभिषेक सम्पन्न करता रहें।

शिव कल्प फाल्गुन कृष्ण पक्ष में अवसर प्रदान कर रहा है देवाधिदेव महादेव से एकाकार होने का... जिसमें है सबसे बड़ा पर्व महाशिवरात्रि...

शिव और गुरु एक ही है, शिष्य को आश्रय में लेकर उसे 'सर्व बाधा विनिर्मुक्तो, धन धान्य सुतान्वितः' से परिपूर्ण करते है। महाकाल-महामृत्युंजय के आशीर्वाद से साधक -

दीर्घायु, यश और वैभव प्राप्त होता है।

भय, व्याधि समाप्त होते है और व्याधि से लड़ने की शक्ति प्राप्त होती है।

जीवन के ग्रहदोष समाप्त होते हैं।

सकारात्मक ऊर्जा में तीव्र गति से वृद्धि होती है, तनाव समाप्त हो जाते हैं।

ओजस्विता, तेजस्विता, शौर्य और पौरुष का संचार होता है।

शिव साधना, मंत्र जप, अनुष्ठान आदि में शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

महाकाल-महामृत्युंजय दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. 3100/-